भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-16, अंक-7 सोमवार, 26 जुला.' 93	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी जुलाई, 1993	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' चल रहा है.... हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरुष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति, आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

❑ .....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्रह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्जरलैंड, 15-7-'77

❑ ❑ ❑

❑ **गुरु** बहुत होते हैं,
परन्तु
❑❑ **सद्गुरु** कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें, तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

शिकागो, 12-5-'-77

–प.पू. काकाजी महाराज

❑ शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह गुरु।
❑❑ सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह **सद्गुरु**।

भगवान हमेशा भक्त की रक्षा में रहते हैं.....

रक्षाबन्धन का परम पवित्र त्यौहार अपनी पवित्रता की खुशबू फैलाता हुआ...2 अगस्त, सोमवार के दिन आ रहा है.....

श्रावणी पूर्णिमा–भारतवर्ष में रक्षाबन्धन का पर्व खूब उमंग, श्रद्धा व दिल की पवित्र भावनाओं से मनाया जाता है....निर्मल प्रेम के प्रतीक रूप बहन भाई की कलाई पर हृदय के भाव से प्रार्थना करते हुए राखी बाँधती है कि प्रभु उसके भाई को लम्बी उम्र व जीवन के हर क्षेत्र में सफलता दे....दूसरी ओर भाई अपनी बहन को रक्षा करने का वचन देता है....पवित्र ब्राह्मण, सन्यासी और सत्पुरुष भाविक भक्तों को राखी अर्पण करके शिष्य की सर्व प्रकार से रक्षा हो और जीवन प्रभुपारायण, संतप्रधान बने ऐसी शुभाशीष देते हैं....सच्चे साधक और मुमुक्षु इस पर्व को और अधिक अनोखी रीत से मनाते हैं.....सच्चा स्वरूपलक्षी साधक अपने भीतर में दृढ़ता से यह मानता है कि भगवान का स्वरूप ही अखंड रक्षा व आत्यंतिक कल्याण दे सकता है.....अंतर के सुख, शांति, इंद्रियों अंतःकरण से रक्षा केवल सच्चे संत की शरणागति में ही निहित है.....सो शिष्य इस भावना से गुरु से राखी बंधवाता है।

जगत में बहन पवित्र प्रेम की–निर्दोष वात्सल्य की प्रतीकरूप राखी भाई की कलाई पर बाँधकर उससे रक्षा का वचन तो लेती है, पर खुद भाई को यदि स्वयं अपनी व बहन की–दोनों की काल-कर्म व माया से रक्षा करानी हो तो किसी पवित्र संत में पक्की निष्ठा रखकर स्वयं को भगवान के हाथों सौंप देना...तो सिर्फ भाई-बहन की ही नहीं बल्कि समग्र परिवार की हर प्रकार से रक्षा होगी....

वर्तमान युग में समाज में चारों ओर गंदगी का ही वातावरण देखकर, समाज को अनैतिकता और अधोगति पतन की ओर गिरता देखकर ही अंधकारमय भविष्य की कल्पना की जा सकती है। कुसंग के जाल में फंसे होते हुए भी जगत के गंदे प्रवाहों से अलिप्त रहना, उनसे अपने संस्कारों की रक्षा करना–वह प्रभु रखे संत की कृपा के बिना शक्य ही नहीं.....आज समाज में हो रहे कुकृत्यों को देखकर यहाँ तक कहा जा सकता है कि यदि किसी परिवार में सच्चे संत का आश्रय नहीं होगा, तो उस परिवार की तन, मन, धन, आत्मा की रक्षा होना असंभव ही होगा....

हम सब अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन युगल उपासना के सेवक हैं। जब तक हमारा चैतन्य अक्षररूप होकर पुरुषोत्तम में सम्पूर्ण रूप से जुड़ ना जाए, तब तक हमारे लिए मन-इन्द्रियाँ-अंतःकरण के बंधनों से रक्षा जरूरी है.....

श्रीजी महाराज ने वच. प्र.18 में स्पष्ट कहा है कि यदि पंच-इन्द्रियों का आहार (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) यदि अयोग्य होगा, तो उस व्यक्ति का अंतःकरण भ्रष्ट हो जायेगा। पंच इन्द्रियों का आहार यदि शुद्ध होगा तो अंतःकरण शुद्ध होगा और अंतःकरण शुद्ध होगा तब ही भगवान की अखंड स्मृति रहेगी। इसलिए प्रगट के उपासकों को रोज एक ही प्रार्थना करते रहना चाहिए कि इंद्रियों अंतःकरण के कुसंग से मेरी रक्षा करना–वह ही भक्त का सच्चा रक्षाबंधन है।

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है–'किसी प्रकार की चिन्ता आये तो भगवान पर छोड़ देना। हम तो बलवान नहीं व वे तो बलवान हैं

और उन्हें रक्षा करनी आती है—जैसे प्रहलादजी की रक्षा करी वैसी अनेक प्रकार से रक्षा करेंगे.....'

अहो ! हम सब का कैसा भाग्य.....कि ऐसे आशीर्वाद देने वाले गुणातीत परम्परा के वारिसदार हमें प्रगट स्वरूपों के रूप में मिले.....तो उन गुणातीत स्वरूपों को खूब पसन्द निर्दोषबुद्धि और सरलता से 'मैं तेरी बांसुरी' की एक भावना रखकर प्रगट प्रभुस्वरूप संत के चरणों में यदि समर्पित हो जायेंगे, तो हमारे बिना कहे ही हमारे आंतरिक व बाहरी कुरुक्षेत्र का अंत आ जायेगा। अब तो नित्य—नवीन श्रद्धा व विश्वास रखकर अखंड 'जपयज्ञ' रूपी रक्षा कवच का आधार लेकर आनन्द करना है।

आज के मंगलकारी दिन पर गुरु गुणातीत के साथ ऐसा अनुपम सम्बन्ध करने सच्चे दिल से प्रार्थना करें और अखंड केवल 'तूं ही तूं ही' हुआ करे ऐसी श्रेष्ठ आध्यात्मिक भूमिका में प्रवेश पायें ऐसी गुरुचरणों में अभ्यर्थना !

❋ ❋ ❋

ब्रह्मप्रवाह

रक्षाबन्धन का सन्देशा

प्रातःस्मरणीय सर्वोत्कृष्ट, सर्वोपरि स्वरूप प.पू. योगी बापा को और प्रत्यक्ष बड़े स्वरूपों को हृदय में धार कर गद्‌गद् कंठ से चरणों में शीश झुकाकर तीव्र अभीप्सा से प्रार्थना करें—

हे महाराज ! हे बापा ! हे संतों ! हे प्रत्यक्ष स्वरूपों ! हमारी जो कसर हो, जिसमें हमने अच्छाई समझी हो वह सब आपकी कृपा से, आपकी दृष्टि से, आपके अनुग्रह से सम्पूर्ण टालकर हमारे जीव की सम्पूर्ण रक्षा करना। क्योंकि—अक्षरधाम के मुक्तों को भी कसर टालनी हो—मतलब 'जैसे हैं वैसे पहचानने' यहाँ (धरती पर) आना ही पड़ता है। सो हमारी भी ऐसी कोई अस्मिता आपकी कृपा से टल जाकर केवल-केवल आपकी रुचि के मुताबिक सहिष्णुता से कर पायें ऐसे आशीर्वाद देना—

समझ में तो आता है कि उपनिषद् का साधक जिज्ञासु व सत्यशोधक था। गीता का साधक जिज्ञासु होते हुए भी सखा था और आखिर साथीदार बना व अंत में भगवत्स्वरूप भी बना। 'स्व' का भाव सम्पूर्ण गुरुचरण में छोड़ देने के बाद—उपनिषद् वाले के मुकाबले इस साकार उपासना में निश्चिंता और निर्भयता है। लेकिन समता, सरलता और नम्रता आने में बहुत ही समय लगता है।

महाराज का मुक्त निश्चय से ही सिद्ध है और 'स्व' का भाव सम्पूर्ण छोड़ दे तो सखा भी है और साधु को पहचाने व सुहृद्‌भाव रखे तो एकांतिक भी है। साधु के संबंध में सेवक से ही शुरुआत होती है। और अंत में दास और दास का भी दास बनता है। हम—पू. बापा के संबंध वाले सभी म.9 और प्र.15 के मुताबिक स्वरूपयोग करते हैं और स्वरूप का बल लेते हैं, सो एकांतिक तो हैं। लेकिन अपना बड़प्पन, अपनी अच्छाई रहती है सो दूसरों की क्रिया देखा करते हैं, दूसरे को उपदेश देने लग पड़ते हैं और दूसरे का दोष देखते रहते हैं। सो हमारा सर्वस्व अब प्रभु को ही अर्पण करके उसमें से ही जो आए उसके मुताबिक कार्य करने के लिए नवकार मन्त्र सिद्ध कर लेना—यह साधु का ज्ञान है।

हम हमारी पूर्णता प्रभुकृपा से प्राप्त करके सहिष्णुता और सुहृद्भाव बढ़ाते रहें ऐसी दिव्यबुद्धि पू. बापा करा दें इस हेतु सवा-सवा घंटे के दो अनुष्ठान करना और साँस में भी—हरेक क्रिया में—पू. बापा का अनुसंधान भूलें ही नहीं ऐसी आदत डालनी।

मन्त्र मारकर यह राखी ऐसी भावना से भेजी है तो ग्रहण करना। हमारी निष्ठा की व एकांतिकभाव की रक्षा बापा करेंगे ही। हमारी जय है—विजय है ही...सिर्फ रवैया बदलना है। पुराना ढाँचा बदलकर और जीवन जीने की सहिष्णुता वाली दृष्टि बनाने पर आगे-पीछे बापा ही दिखाई देंगे व वच. कारियाणी-7 सिद्ध होगा। सब को ऐसा बापा करा देवे यही सभी को अंतर के जयश्री स्वामिनारायण !

—प.पू. काकाजी महाराज

ताड़देव, 4-8-'82

❋❋❋

स्वामी की बातें

292. स्वामी ने बात करी कि मक्खी में से सूर्य करना, इतना परिश्रम—वह तो भगवान जैसा हो उससे ही हो, दूसरे से नहीं।

प्र—5,25

293. सत्संग से भगवान जितने वश होते हैं उतने दूसरे किसी साधन से नहीं होते। वह सत्संग का अर्थ यह है कि भगवान और संत के प्रति जितना सद्भाव—उतना सत्संग है। वह होना कठिन है।

प्र—5,26

294. निष्कुलानंदस्वामी को महाराज ने पूछा कि संतदासजी बड़े या मुक्तानंदस्वामी बड़े? तब निष्कुलानंदस्वामी ने कहा कि संतदासजी सिद्धदशा को पाए हुए हैं सो वे बड़े। तब महाराज ने कहा कि—संतदासजी की तरक्की होनी बंद हुई और मुक्तानंदस्वामी की बढ़ोत्तरी होती है इसलिए वे बड़े। वहाँ दृष्टांत दिया कि हवेली में बहुत खर्च करे तो दो लाख रुपये खर्च होएँ, इससे अधिक नहीं होवें और खेडा के केंप में जो दस लाख रुपये का खर्च हुआ है वह दस लाख रुपये की नींव डाली है और उसकी कीमत बढ़ती जा रही है। वैसे ही संतदासजी हवेली जैसे व मुक्तानंदस्वामी खेडा के केंप जैसे हैं। इस प्रकार महिमा समझनी।

प्र—5,27

295. गोपाळानंदस्वामी की कही बात करी कि—'मेरे ज्ञान को दो जने पाए; बाल मुकुंदानंदस्वामी तथा सर्वनिवासानंदस्वामी। और मेरा सत्संग तो गढ़डा के पास की नदी के झरने जैसा है। आकाश से बारिश का बल होए तब तक उसमें बल रहे। यूं सत्संग से समागम का बल होवे तब तक ठीक रहे और उसके बिना तो संभले ही नहीं।

प्र—5,28

296. सत्संग करने पर पहले विवेक आता है, जिससे सत्य-असत्य समझ में आता है, उसके बाद विमोक आता है, जिससे स्त्री आदि की इच्छा

टल जाती है। फिर क्रिया करनी आती है– मतलब, सत्संग की रीत के मुताबिक सबसे मिलजुल कर क्रिया करनी आती है। उसके बाद सबसे परे ऐसा खुद का स्वरूप ब्रह्मरूप माना जाए। फिर भगवान वश होते हैं। उसके बाद जैसे जीव देह की रक्षा करता है, स्त्री पति की सेवा करती है यूं भगवान सर्व प्रकार से रक्षा करते हैं।

प्र–5,29

297. जिसका समागम पाने की प्रार्थना करते हैं उसका समागम भगवान ने हमें साक्षात् दिया है।

प्र–5,30

298. पंच महापाप करने वाले के लिए शास्त्रों में प्रायश्चित नहीं बताया; परन्तु इस सभा के दर्शन से तो उसके पाप टल जाएँ। क्योंकि इस सभा में भगवान हैं, साधु है, सब कुछ है।

प्र–5,31

299. पुरुषोत्तम के साथ अक्षर मूर्तिमान आए हैं परन्तु पहचाने नहीं जाते। इस सभा में वे हैं यूँ कहें तो माना नहीं जायेगा। सो, अपने आप यह कहने की रीत नहीं; उनके मुक्त के कहने से निश्चय होता है।

प्र–5,32

300. कुठार में हरिशंकरभाई को बात करी कि आज सुबह की सभा में बहुत अच्छी बातें हुई। वह क्यों? कि–सभा में भगवान आये थे ! अभी मानो किसी को समझ नहीं आता होगा, तो आगे समझ में आएगा। चींचड़ी आंचल में रहती है। तब भी खून पाती है व बछड़ा गाय से दूर रहता है फिर भी दूध पाता है।

प्र–5,33

❋ ❋ ❋

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	29.7.93	गुरुवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	2.8.93	सोमवार	रक्षाबंधन श्रावणी पूर्णिमा
3.	दि.	11.8.93	बुधवार	जन्माष्टमी, व्रत
4	दि.	14.8.93	शनिवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at R.P. Printers, Shahdara, Delhi-110 032